माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

1579269

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2 0 4 1 3 5 4 8 9

शब्दों में: दो शून्य चार एक तीन पांच चार आठ नौ

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 01 शब्दों में एक

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 11

ग :- परीक्षा का दिनांक 02 03 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी परीक्षा केन्द्र क्र. 412017

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
ज्योति जैन	(D.K. JAIN)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक … पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य प… मुद्रा … मुद्रा

Govt. H… Mo. No. 99832… 82… H.S…

नोट :- "हायर सेकेण्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के वि… प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्… 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्र… एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में …

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रश्न क्रमांक के … प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (1) का उत्तर

(i) महादेवी वर्मा .

(ii) कबीरदास

सुजान

सावन गीत

(v) पाड़ोन के जंगल में ।

BSE

प्रश्न क्र. (2) का उत्तर

(अ) छायावाद

(ब) श्रीकृष्ण

) जल शोधन

) तीन

(इ) गणेशशंकर विद्यार्थी

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHY

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (3) का उत्तर

(1) असत्य

(2) सत्य

(3) असत्य

(4) असत्य

(5) सत्य

BSE

प्रश्न क्र. (4) का उत्तर

(अ) सभी विपत्तियों को हरते हैं = गणेश जी

व्यंग्य की प्रधानता = नई कविता

मध्यमवर्गीय परिवार की समस्या = नये मेहमान

(ब) कंस की बहन = देवकी

(स) गाय करुणा की कहानी है = महात्मा गांधी

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (5) का उत्तर

(अ) मथुरा से योग सिखाने उद्धव जी आये थे।

(ब) भय साध्य और असाध्य दो रूपो में सामने आता है।

जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु को लक्ष्य में रखकर अन्य के लिए बात कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

B (द) प्रयोग का प्रारंभ सन 1943 में हुआ।

S (इ) बसंत ~~अपने साथ~~ प्रसन्नता का भाव लेकर आता है।

E

प्रश्न क्र- (6) का उत्तर (अथवा)

कृष्ण ने दही का दोना अपनी पीठ के छिपा लिया।

प्रश्न क्र- (7) का उत्तर

चातक पक्षी की बोली कवि घनानंद के विरही हृदय को दुःख पहुँचा रही है, इसलिए कवि घनानंद ने चातक को घातक कहा है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (8) का उत्तर (अथवा)

क्षणिक आतंक से तात्पर्य पल भर के लिए आई हुई बाधा या विपत्ति से है, जो क्षण भर के लिए आएगी परंतु युवाओं का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगी और बाद में चली जाएगी।

प्रश्न क्र. (9) का उत्तर

केवट के अनुसार पगधूरि का बहुत प्रभाव है, इसके प्रभाव से शिला (पत्थर) भी स्त्री बन जाती है।

प्रश्न क्र. (10) का उत्तर (अथवा)

गीतकार वीरेन्द्र मित्र के अनुसार सांझ सकारे भारत माता की आरती चंद्रमा और सूरज (सूर्य) करते हैं।

प्रश्न क्र. (11) का उत्तर

अर्थहानि के भय के कारण व्यापारी व्यवसाय में हाथ नहीं डालते हैं।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (12) का उत्तर

रेवती का घर छोटा, धुआं देने वाला व जीवन की सुविधाओं से रहित है, इसलिए गर्मी से बेहाल रेवती अपने घर को जेलखाना कहती है।

प्रश्न क्र. (13) का उत्तर

तात्या एक वर्ष से अंग्रेज सरकार से भाग-भागकर थक गए थे तथा तात्या का स्वास्थ्य भी बिगड़ चुका था व मानसिंह तात्या के एक विश्वसनीय मित्र थे, इसलिए तात्या मानसिंह के - संरक्षण में गए।

प्रश्न क्र. (14) का उत्तर

उत्तराखंड के चारों धाम चार पवित्र नदियों के किनारे स्थित हैं।
गंगोत्री का धाम गंगा नदी के किनारे - किनारे, यमुनोत्री धाम यमुना नदी के किनारे - किनारे, केदारनाथ धाम मंदाकिनी नदी के किनारे - किनारे व बद्रीनाथ धाम अलकनंदा नदी के किनारे - किनारे स्थित हैं।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (15) ...र (अथवा)

(i) अधजल गगरी छलकत जाए

अर्थ- अल्प ज्ञान, किंतु प्रदर्शन अधिक

वाक्य में प्रयोग :- मोहिनी ने अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश लेकर अपने दोस्तो के सामने अपने अल्प ज्ञान का दिखावा कर रही थी, यह तो वही बात हुई अधजल गगरी छलकत जाए।

(ii) आँखो पर पट्टी बाँधना

अर्थ- सच सामने होकर भी उसे न देखना

वाक्य में प्रयोग :- राम की चोरी सामने होकर होने पर भी उसकी माँ ने आँखो पर पट्टी बाँध ली है।

प्रश्न क्र. (16) का उत्तर (अथवा)

छंद :-

जिस काव्य में मात्रा, वर्ण, लय, तुक, गति आदि का ध्यान रखकर रचना की जाती है, उसे छंद कहते हैं।

या

"कविता रचना के विधान को छंद कहते हैं।"

प्रश्न क्र.

छंद दो प्रकार के होते हैं -

1. मात्रिक छंद
2. वर्णिक छंद

मात्रिक छंद :- जिस छंद में मात्राओं की गणना की जाती है, उसे मात्रिक छंद कहते हैं। उदा. दोहा छंद, रोला छंद।

वर्णिक छंद :- जिस छंद में वर्णों की गणना की जाती है, उसे वर्णिक छंद कहते हैं। उदा. कवित्त छंद, सवैया छंद।

BSE

प्रश्न क्र- (17) का उत्तर (अथवा)

डॉ. रामकुमार वर्मा की माँ राजरानी देवी एक उच्च कोटि की साहित्यकार व काव्य ज्ञान से परिपूर्ण थी। वह एक सुसंस्कृत व सुशिक्षित महिला थी। उन्होंने अपने बेटे में भी अच्छे संस्कार डालने का पूर्ण प्रयास किया डॉ. रामकुमार वर्मा माँ उनका हमेशा मार्गदर्शन करती रही।

इसी का परिणाम हुआ कि डॉ. रामकुमार वर्मा कभी अनुत्तीर्ण नहीं हुए यद्यपि डिवीजन से हमेशा उत्तीर्ण हुए। डॉ. रामकुमार वर्मा की माँ का कहना था कि हमें हमेशा परीक्षा में पहले दर्जे का ध्यान रखना चाहिए

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

वह उन्हे समझाता उ- कि हमें उसी प्रकार अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त होकर प्रयास करना चाहिए जिस प्रकार महाभारत में अर्जुन ने चिड़िया की आँख को ही अपना लक्ष्य माना था।
इस प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा की माँ उनके लिए ~~एक~~ माता के साथ - साथ एक गुरु भी थी।

प्रश्न क्र. (१४) का उत्तर (अथवा)

B
S
E

राष्ट्र भाषा :-

भाषा एक ऐसा साधन है, मनुष्य के लिए जिसके द्वारा वह अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। किसी भी एक देश या राष्ट्र में एक ऐसी भाषा होती है, जिसके द्वारा राष्ट्र के सभी निवासी अपने विचारो का आदान - प्रदान करते है, ~~सके~~ उसे राष्ट्र भाषा कहते हैं।
राष्ट्र भाषा राष्ट्र में रहने वाले अधिकतर नागरिको द्वारा बोली जाती है।
हर एक राष्ट्र की अलग - अलग राष्ट्र भाषाएँ होती है। राष्ट्र भाषा का रूप व्यापक होता है।

राष्ट्र भाषा की दो विशेषताएँ :-

(१) राष्ट्र भाषा राष्ट्र ~~भाष~~ की अन्य भाषाओं की प्रगति में सहायक होती है।
(२) राष्ट्र भाषा का व्यवहार संपूर्ण राष्ट्र में होता है व राष्ट्र भाषा ही उस देश के

SECONDARY ... MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADE... SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

आदर्शों व संस्कारो को अभिव्यक्त करती है।

प्रश्न क्र. (19) का उत्तर

श्लेष अलंकार :-

काव्य व पंक्ति में जहाँ एक ही बार प्रयुक्त हुए शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले, वहाँ श्लेष अलंकार होता है

B
S
E

श्लेष अलंकार का उदाहरण -

" जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय ।।

उपर्युक्त उदाहरण में एक ही बार प्रयुक्त हुए शब्द "बारे" के दो अर्थ हैं एक है लड़कपन व दूसरा अर्थ है जलाने से। एक ओर शब्द "बढ़े" के भी दो अर्थ है एक अर्थ है बड़ा होने से व दूसरा अर्थ है बुझ जाने से।
अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (20) का उत्तर (अथवा)

छायावाद और रहस्यवाद में अंतर –

क्र.	छायावाद	रहस्यवाद
(1)	परिभाषा – डॉ. नगेंद्र के अनुसार स्थूल के प्रति सूक्ष्म विद्रोह को छायावाद माना गया है।	परिभाषा – मुं मुकुटधर पांडेय के अनुसार प्रकृति में सूक्ष्म सत्ता का दर्शन होना ही रहस्यवाद है।
(2)	छायावाद में कल्पना की प्रधानता है।	रहस्यवाद में चिंतन की प्रधानता है।
(3)	छायावाद में भावना की प्रधानता है।	रहस्यवाद में ज्ञान व बुद्धितत्व की प्रधानता है।
(4)	छायावाद के मूल में प्रकृति है।	रहस्यवाद की प्रकृति पारलौकिक है।
	छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' व महादेवी वर्मा है।	रहस्यवाद के प्रमुख कवि कबीरदास, मीराबाई व जायसी है।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (2) का उत्तर (अथवा)

नाटक और एकांकी में चार अंतर निम्न हैं-

क्र.	नाटक	एकांकी
(1)	नाटक में अनेक अंक होते हैं। परिभाषा - नाटक एक ऐसी अभिनयपरक विधा है, जिसमें नायक के जीवन से जुड़ी सभी घटनाओं का अभिनय रहता है।	एकांकी एक अंक का दृश्य काव्य है। परिभाषा - डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार एकांकी में ऐसी घटना रहती है, जिसका जिज्ञासापूर्ण एवं कौतूहलमय नाटकीय शैली में चरम विकास होकर अंत होता है।
(2)	नाटक में आधिकारिक के साथ गौण कथाएँ भी होती हैं।	एकांकी में एक ही घटना प्रमुख होती है।
(3)	नाटक के कथानक में फैलाव और विस्तार होता है।	एकांकी के कथानक में घनत्व रहता है।
(4)	नाटक के कथानक की विकास प्रक्रिया धीमी रहती है।	एकांकी का कथानक आरंभ से ही द्रुत गति से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता चला जाता है।
उदा.	(1) अंधेर नगरी - भारतेन्दु हरिश्चंद्र (2) जय-पराजय - उपेन्द्रनाथ अश्क	(1) एक घूँट - जयशंकर प्रसाद (2) दीपदान - डॉ. रामकुमार वर्मा।

BSE

EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (22) का उत्तर

साहित्यिक परिचय

तुलसीदास

तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम आत्माराम व माता का नाम हुलसी था। आपके गुरु नरहरि दास थे।

(अ) दो रचनाएँ :- रामचरितमानस (महाकाव्य), विनय पत्रिका (गीतिकाव्य)।

(ब) भावपक्ष :- तुलसीदास को अपने गुरु नरहरि दास की कृपा से भक्ति का ~~भाव~~ मार्ग मिला। तुलसीदासजी के मन में प्रभु श्रीराम के प्रति अनन्य भक्ति - भावना थी। तुलसीदास जी का भाव - पक्ष अत्यंत प्रबल है।

(i) भक्ति - भावना :-

तुलसीदासजी प्रभु श्री राम के अनन्य भक्त थे। आपने प्रभु श्रीराम की बहुत उपासना की। आपके प्रभु सगुण - साकार श्री राम थे। आपने राम नाम को ही मुक्ति का मार्ग बताया। आपके अनुसार राम नाम के बिना कोई भी व्यक्ति इस भव - सागर से नहीं तर सकता है।
प्रभु श्री राम पर आपने अनेक काव्य रचनाओं का सृजन निर्माण किया।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(ii) दार्शनिक भाव :- तुलसीदास ~~की~~ के काव्य में दार्शनिक भाव की अनुपम छटा दिखाई देती है। आपने दार्शनिक भाव को लेकर काव्य रचनाऐं की आपका भक्ति पक्ष अत्यंत सबल था। आपके अनुसार भक्ति मार्ग के द्वारा ही परमात्मा से मिलन हो सकता है।

काव्यपक्ष :- आपने अपनी रचनाओं में मुख्यतः निम्न भाषा का प्रयोग किया है।

(i) भाषा :- तुलसीदासजी की मुख्यतः भाषा ब्रजभाषा एवं अवधी भाषा थी। आपकी अनेक रचनाऐं ब्रज भाषा में लिखी गई है। आपनें प्रबंध व मुक्तक शैली को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है।

(ii) रस एवं छंद :- आपने अपनी रचनाओं में श्रृंगार व शांत रस का प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में मुख्यतः दोहा व चोपाई छंद का प्रयोग दिखाई देता है। आपने उपमा, उत्प्रेक्षा व रूपक अलंकारों का प्रयोग किया।

तुलसीदासजी के विषय में कहा गया है कि -

"कविता करके तुलसी न लसे, लसी
कविता पा तुलसी की कला।"

अर्थात कविता करके तुलसी धन्य नहीं

प्रश्न क्र.

हुए। तुलसी की कला पाकर कविता धन्य हो गयी।

) साहित्य में स्थान :- तुलसीदासजी का भक्तिकाल की सगुण धारा के की राममार्गी शाखा में विशिष्ट स्थान है।

प्रश्न क्र. (23) का उत्तर (अथवा)

साहित्यिक परिचय

शरद जोशी

प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक शरद जोशी का जन्म उज्जैन, मध्यप्रदेश में हुआ था।

(अ) दो रचनाएँ :- एक था गधा, अंधों का हाथी।

(ब) भाषा :- व्यंग्यकार शरद जोशी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। आपकी भाषा सरल, सहज व स्वाभाविक है। आपने अपनी रचनाओं तत्सम व तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में कहीं - कहीं उर्दू व अंग्रेजी ~~फारसी~~ भाषा के भी शब्दों का प्रयोग हुआ है।
आपने अपनी रचनाओं में मुहावरे व लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है। प्रसिद्ध

प्रश्न क्र.

मुहावरों [illegible] रचनाओं के हास्य - व्यंग्य को बल मिला है। आपकी रचनायें हास्य - व्यंग्य से परिपूर्ण हैं। आपका व्यंग्य हृदयस्पर्शी है। आपने देश व समाज में व्याप्त समस्याओं व बुराईयों पर बड़े अच्छे व्यंग्य निबंध लिखे हैं।

शैली :-

आपकी प्रमुख शैलियां निम्न हैं -

(1) व्यंग्यात्मक शैली :-

शरद जोशी की व्यंग्यात्मक शैली प्रमुख शैली थी। आपने अपने व्यंग्य से भरे लेख व निबंधों में इस शैली का प्रयोग किया। इस शैली के प्रयोग से आपके व्यंग्य ~~को~~ में जीवंतता का समावेश हुआ है।

(ii) आलोचनात्मक शैली :-

आपने अपने व्यंग्य निबंधों में कई प्रकार के व्यक्तियों की आलोचना को बड़े ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया। जिन निबंधों में व्यक्तियों की आलोचना की बात आई है, वहां आपने आलोचनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

(स) साहित्य में स्थान :- ~~स्व~~ आधुनिक काल के प्रसिद्ध व्यंग्य लेखकों में आपका विशिष्ट स्थान है। आपने म.प्र. के विभाग में 10 वर्षों तक सेवा दी

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (२५) का उत्तर (अथवा)

कौन कहता है कि - - - - - - - - - - नाश हिलोर।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के "शौर्य और देश प्रेम" शीर्षक के 'अरे तुम हो काल के भी काल' से अवतरित किया गया है। इसके रचयिता बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने देश के युवाओं में उर्जा का ~~क भरते~~ संचार हुए उनका आह्वान किया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि देश के युवाओं में जोश भरते हुए कहते हैं कि इस देश के युवाओं को कोई भी चोट नहीं पहुँचा सकता है। कवि युवाओं से कहते हैं कि तुम्हें कोई भी शत्रु नुकसान नहीं पहुँचा पायेगा तुम तो काल के भी काल हो, मृत्यु तुम्हारे सामने कुछ भी नहीं है। तुम्हारी वाणी में गर्जना है। काल रूपी धनुष का तीर भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। तुम्हारी वाणी एक धनुष के तीर के समान है, जिससे इस पूरी धरती पर एक कंपन उत्पन्न होनें लगेगा। तुम्हारी वाणी से सृजन होगा व नाश का नामो निशान मिट जायेगा।

विशेष :- (1) खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

(2) वीर रस का प्रयोग हुआ।

B S E

ओज गुण है।

देशभक्ति की भावना जाग्रत की गई है।

प्रश्न क्र. (25) का उत्तर

असल प्रकाश तो हमारे ..... कभी रुकती नहीं

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के ललित निबंध 'तिमिर गेह में किरण' आचरण' से अवतरित किया गया है। इसके रचयिता (लेखक) डॉ. श्यामसुंदर दुबे हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक सृजन की महिमा का वर्णन करते हैं।

व्याख्या :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहते हैं कि असली प्रकाश तो मनुष्य के ऊपर, मनुष्य के हृदय में छिपा है और वह है सृजन (निर्माण) का प्रकाश त्याग का आचरण, शील, श्रम, विवेक व भावना, जिसे छू ले वह प्रकाशित हो जाता है। अपनी के आचरण, शील व श्रम में बहुत ताकत होती है वह किसी भी प्रकाशमान कर स्वयं प्रकाशित हो जाता है।
बड़े - बड़े अंधेरो में भी सृजन का प्रकाश निरंतर अपनी धारा बहाता रहता

प्रश्न क्र.

जवार व पीले गेहूँ के पौधे व्यक्ति को ~~संदेश~~ संदेश देते हैं कि जिस प्रकार हमारे अंकुरित होने की हमारी निर्माण होने की यात्रा निरंतर चलती रहती है उसी प्रकार सृजन (निर्माण) की यात्रा भी निरंतर चलती रहनी चाहिए। सृजन का कार्य मनुष्य के जीवन में लगातार होना चाहिए।

विशेष :-

(1) खड़ी - बोली का प्रयोग हुआ।

(2) ललित व कलात्मक शैली का प्रयोग हुआ।

(3) सृजन को महत्व दिया गया है।

(4) प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न क्र. (26) का उत्तर

(अ) शीर्षक - "कर्मठता की महत्ता"

(ब) सही श्रम वही है जो ठोस परिणाम देता है।

(स) सारांश :- कर्मठता लक्ष्य की निश्चितता है। कोरा श्रम तो बालकों के खेल में भी होता है। सही श्रम तो वही है जो ठोस परिणाम देता है। देश में कर्मठता के ~~प्रतिशत~~ प्रतिशत को ~~बढ़ाने के लिए~~ बढ़ाना व कर्मठजनों का निर्माण करना ही हमारी शिक्षा का उद्देश्य है।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (27) का उत्तर (अथवा)

92/7 प्रेम कॉलोनी
मंदसौर (म.प्र.)
दिनांक - 02/03/2020

प्रिय मित्र रमेश,

आज नवज्योति समाचार पत्र में हायर सेकेण्डरी परीक्षा का परीक्षा - परिणाम देखा। मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आपने परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। आपने हायर सेकेण्डरी परीक्षा में सर्वोच्च अंक लाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इससे आप ही नहीं हम लोग, पूरा परिवार व विद्यालय भी गौरवान्वित हुआ है। सप्रेम बधाई स्वीकार हो। ईश्वर करे तुम आगे भी इसी प्रकार उपलब्धियाँ अर्जित करो। तुम्हारा भावी कार्यक्रम क्या है, इससे मुझे अवश्य अवगत कराना।

तुम्हारा मित्र
(सतीश)

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (28) (अ) का उत्तर

निबंध

"विज्ञान और मानव जीवन"

रूपरेखा –

(1) प्रस्तावना
(2) हमारा अतीत
(3) चिकित्सा के क्षेत्र में
(4) शिक्षा के क्षेत्र में
(5) यातायात के क्षेत्र में
(6) विज्ञान और मानव जीवन
(7) उपसंहार

" यही समय विज्ञान का सब भाँति पूर्ण समर्थ ।
खुल गए हैं संस्कृति के अमित गुरु अर्थ ॥
चीरता – तमन को संभाले बुद्धि की पतवार ।
आ गया है ज्योति की नवभूमि में संसार ॥"

(1) प्रस्तावना :- यह धरती कई वर्षों पुरानी है। इस धरती पर जिस प्रकार मानव का जन्म हुआ उसी प्रकार मानव की आवश्यकताओं का भी जन्म हुआ। मनुष्य अपने जन्म के साथ अपनी आवश्यकताएँ व इच्छाएँ लेकर इस धरती पर आता है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरंतर विकास कार्य की ओर बढ़ रहा है। देश व मनुष्य के विकास के साथ ही

B
S
E

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

पृथ्वी पर [illegible] आविष्कार हुआ है। मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति के लिए व मनुष्य के द्वारा बनाई गई प्रत्येक वस्तु विज्ञान की देन है। विज्ञान ने देश में बहुत प्रगति की है। जिस प्रकार मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती गई उसी प्रकार विज्ञान की देन भी बढ़ती गई। ~~विज्ञा~~ विज्ञान ने मनुष्य के जीवन को आरामदायक व सुखकारी बना दिया है। मानव का सुबह से लेकर शुरू हुआ जीवन रात के आखिरी पहर तक विज्ञान पर ही निर्भर है। अब तो ऐसी स्थिति हो गई है कि मनुष्य खाने के बिना रह सकता है, परंतु विज्ञान की देन के बिना नहीं रह सकता है।

B S E

(2) हमारा अतीत !- जब व्यक्ति अपने पूर्व व अतीत के बारे में सोचता है तो उसके मन में एक ही बात आती है कि पहले मानव कितना परिश्रमी था। पहले मानव के पास कुछ भी वस्तुएँ उपलब्ध नहीं थीं। व्यक्ति को बहुत दूर मीलों की दूरी भी पैदल व ताँगों के द्वारा तय करनी पड़ती थी। गाँवों व शहरों में अत्यधिक चिकित्सा सुविधा न होने के कारण लोग रोग व पीड़ा से ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी कोई नयापन नहीं था। व्यक्ति गुरुकुल व आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

करता था ... पारंपरिक हलों से आदि यंत्रों से खेती का कार्य किया जाता है। पूर्व में मानव का जीवन न तो सुखकारी था व ~~नहीं~~ न ही आरामदायक था।

(3) चिकित्सा के क्षेत्र में :- वर्तमान में मानव ने चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर ली है। गाँवो व शहरों में कई प्रकार से चिकित्सा की सुविधाएं उपलब्ध है। रोगी मनुष्य का इलाज करना बहुत ही आसान हो गया। शहरों में बड़े-बड़े अस्पतालों व उन अस्पतालों के चिकित्सकों के कारण असाध्य रोग को भी साध्य बनाया जा रहा है। ~~व्य~~ व्यक्ति नित्य नए-नए आविष्कार करके कैंसर, चेचक, पोलियो आदि बीमारियों से मुक्ति पाने में लगा हुआ है। चिकित्सकों ने वर्तमान में इस क्षेत्र में क्रांति ला दी है। देश में हर एक बीमारी का इलाज करना संभव है। एक्स-रे सोनोग्राफी तो मनुष्य के लिए वरदान सिद्ध हुई है। सर्जरी जैसी नई तकनीक से, कई लाखों का इलाज मुमकिन हो पाया है।

"सब कुछ विज्ञान है
~~सुबह~~ सुबह से शाम तक सब विज्ञान है
बनाया है मनुष्य जीवन को विज्ञान ने
आरामदायक व सुखदायक।"

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(4) ~~क~~ 'शिक्षा के

देश में शिक्षा क्षेत्र में भी बहुत उन्नति हुई है। शिक्षा के लिए देश में अच्छे से अच्छे विद्यालय खुले। विज्ञान के द्वारा किया गया महत्वपूर्ण आविष्कार कम्प्यूटर ने तो शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। शिक्षा व्यक्ति अब घर बैठे भी कम्प्यूटर के माध्यम से ग्रहण कर सकता है। आज की दुनिया में शिक्षा प्राप्त करना बहुत आसान हो गया। विज्ञान द्वारा बनाये गये आविष्कार कैलकुलेटर ने भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सहयोग दिया है।

Computer (कम्प्यूटर के चित्र)

(5) यातायात के क्षेत्र में :-

मनुष्य ने यातायात के क्षेत्र में भी ~~क~~ बहुत प्रगति की है। पूर्व में दो कोस ~~न~~ दूरी तय करने के लिए व्यक्ति पैदल ही जाया करता था परंतु आज बस, ट्रक, कार, मोटर साईकल से दूरी तय करना बहुत आसान हो गया ~~गई~~ है। व्यक्ति आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच सकता है। हवाई जहाज जैसे आविष्कार ने तो दूर देशों की दूरियों को भी बहुत छोटा बना दिया है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल **2020** 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी	02 03 2020

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा
हायर सेकेण्डरी परीक्षा
केन्द्र क्र. 412017

परीवीक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर
दीपक २१५४७१८

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
(D.K. JAIN)

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक .... तक कुल प्राप्तांक

B
S
E

प्रश्न के अंकों का योग

(6) विज्ञान और मानव जीवन :-

मनुष्य का सुबह से लेकर शाम तक का जीवन विज्ञान पर निर्भर करता है। मनुष्य के दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली प्रत्येक वस्तु विज्ञान की देन है। मनुष्य के जीवन में उपयोग होने वाला पंखा, कूलर, फ्रिज, वाशिंग मशीन, मोबाइल फोन, सभी विज्ञान की देन है। इन उपकरणों से मनुष्य का जीवन सरल व सुखद बन पड़ा है। स्मार्ट फोन के आविष्कार ने देश में एक नया परचम फहराया है। इसके प्रयोग से व्यक्ति घर बैठे ही दूर देश में स्थित व्यक्तियों से बात कर सकता है। वह एक स्थान पर रहकर वस्तुओं के क्रय-विक्रय का ~~क्रय~~ कार्य कर लेता है।

(7) उपसंहार :-

जहाँ एक ओर विज्ञान ने मानव के जीवन को सुखी तथा सरल बनाया। वहीं एक ओर बम, परमाणु बम जैसे आविष्कार ने मनुष्य का धरतीपर रहना दुःख में डाल दिया है एक बम के किसी एक जगह पर रखने से वहाँ धमाका होने से वहाँ की चीजें नष्ट हो जाती हैं व सब कुछ तहस - नहस हो जाता है। इसलिए मनुष्य को विज्ञान का सदुपयोग ही करना चाहिए।

"भला बुरा न कोई रूप से दिखलाता,
दृष्टि भेद स्वयं दोष गुण दिखलाता।
कोई कमल की कली देखता है कीचड़ में
किसी को चाँद में भी दाग नजर आता है।

प्रश्न क्र- (24) (ब) का उत्तर

रूपरेखा

(iii) स्वच्छ भारत अभियान

(1) प्रस्तावना
(2) स्वच्छ भारत अभियान क्या है?
(3) स्वच्छ भारत अभियान की जरूरत
(4) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान
(5) स्वच्छ - भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान
(6) शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन
(7) उपसंहार।

समाप्त